WitWaves
Journal of Multidisciplinary Research

International Peer-Reviewed E-Journal
E-ISSN: 3107-4235

Vol – 3
Issue – 2
Apr-Jun
2026

आज के संदर्भ में भारत और अमेरिका के संबंधों का राजनीतिक विश्लेषण

डॉ.शिव कुमार गुप्ता[1, *]

[1]सहा.प्राध्यापक-राजनीति विज्ञान विभाग, स्व.सुंदर लाल शिवहरे पी.जी. कॉलेज मकरांव मौदहा हमीरपुर (उ०प्र०)

https://doi.org/10.64175/wjmr.vol.3.issue2.9

[1]shivkumarpolscience@gmail.com

Article Info

Keywords:

- *घनिष्ठ*
- *निवेश*
- *कृत्रिम बुद्धिमत्ता*
- *वैश्विक*
- *परिदृश्य*

Abstract

लोकतांत्रिक मूल्यों और भू-राजनीतिक हितों पर आधारित एक 'रणनीतिक साझेदारी' हैं। बदलते वैश्विक परिदृश्य में, दोनों देशों के बीच रक्षा, प्रौद्योगिकी और व्यापार में सहयोग बढ़ा है, हालांकि अमेरिका और भारत की नीतियों के कारण कुछ व्यापारिक और ऊर्जा संबंधी मतभेद भी बने हुए है। शीत युद्ध के दौरान एक-दूसरे से दूर रहने वाले ये देश अब घनिष्ठ रणनीतिक भागीदार बन चुके हैं। चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए दोनों देश 'क्वाड' (Quad) समूह के प्रमुख सदस्य हैं, जो इस क्षेत्र में स्वतंत्र और नियम-आधारित व्यवस्था बनाए रखने पर जोर देते हैं। रक्षा समझौते जैसे समझौतों ने दोनों सेनाओं के बीच सैन्य सूचनाओं और उन्नत तकनीक के आदान-प्रदान को आसान बनाया है।

द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए हाल ही में अंतरिम पारस्परिक व्यापार समझौते हुए हैं, जिसके तहत भारतीय वस्तुओं पर अमेरिकी टैरिफ (आयात शुल्क) में कमी की गई है। अमेरिकी कंपनियाँ भारत के डिजिटल और बुनियादी ढाँचे में भारी निवेश कर रही हैं। 'इनीशिएटिव ऑन क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी' (iCET) के तहत सेमीकंडक्टर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ रहा है।

भूमिका

वर्तमान विश्व परिदृश्य में भारत अमेरिका से संबद्धता, आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी दृष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। शीत युद्ध के बाद दोनों देशों के रिश्तों में निरंतर परिवर्तन और खाई बनी हुई है। 21वीं सदी में भारत एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में सामने आया, जबकि अमेरिका विश्व की अग्रणी महाशक्ति बन गया। साझा लोकतांत्रिक मूल्य, समुद्र तट के खिलाफ सहयोग, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता, रक्षा सहयोग, व्यापार निवेश, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और विज्ञान प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग ने समूह को नई दिशा दी है। हालाँकि, व्यापार संबद्धता, वीज़ा नीति, मानवाधिकार, और प्रतिष्ठित स्वत्व जैसे मुद्दे देशों के अधिभोग में चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करते हैं। इसके बावजूद, समकालीन वैश्विक उपन्यासों के समाधान के लिए भारत अमेरिका ने भविष्य में और अधिक साझेदारी की संभावना जताई है। यह शोध पत्र वर्तमान दौर में भारत व अमेरिका के प्रमुख आयाम, अवसर एवं अनावरण का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

शोध विस्तार

भारत-अमेरिका संबंधों ने 2026 में अपने उच्चतम स्तर को छुआ जब फरवरी में एक ऐतिहासिक अंतरिम व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिसके तहत भारतीय उत्पादों पर अमेरिकी टैरिफ 50% से घटकर 18% हो गया, जबकि भारत ने अगले पांच वर्षों में 500 अरब डॉलर मूल्य के अमेरिकी सामान खरीदने की प्रतिबद्धता जताई। 2025 के तनावों का समाधान जीपीयू और डेटा केंद्रों के साथ-साथ ऊर्जा और कृषि क्षेत्रों में तकनीकी प्रगति के माध्यम से आपूर्ति श्रृंखला में सुधार लाएगा और गैर-टैरिफ व्यापार बाधाओं को दूर करेगा। रणनीतिक संबंध चीन के विरुद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा, रक्षा (युद्ध अभ्यास), आतंकवाद-विरोधी गतिविधियों और आईसीईटी नवाचार पर जोर देते हैं, जिससे भारत अपनी स्वतंत्रता बनाए रखते हुए क्वाड गठबंधन के साथ मजबूत संबंध स्थापित कर सकेगा।

भारत-अमेरिका संबंधों की शुरुआत 1947 में भारत की स्वतंत्रता के साथ हुई। इन संबंधों को शीत युद्ध के दौरान कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, क्योंकि अमेरिका पाकिस्तान का समर्थन कर रहा था और 1974 में भारत द्वारा किए गए परमाणु परीक्षण के बाद उसने भारत पर परमाणु प्रतिबंध लगा दिए थे। वियतनाम युद्ध और सोवियत संघ के साथ भारत के बढ़ते संबंधों के कारण, जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों ने अपना गठबंधन समाप्त कर दिया, संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1962 के चीन-भारत युद्ध के दौरान भारत को सीमित सैन्य सहायता प्रदान की। फरवरी में हुए अंतरिम व्यापार समझौते के तहत 2026 के लिए भारत-अमेरिका संबंधों का रणनीतिक पुनर्गठन किया गया है। इसके अंतर्गत भारतीय निर्यात पर अमेरिकी टैरिफ 50 प्रतिशत से घटाकर 18 प्रतिशत कर दिया गया है और अगले पांच वर्षों में 500 अरब डॉलर के अमेरिकी उत्पादों की खरीद का वादा किया गया है, जो मुख्य रूप से कृषि, सेमीकंडक्टर और महत्वपूर्ण खनिजों पर केंद्रित होगा। यह समझौता 2025 के विवादों को भी सुलझाता है, जिससे आपूर्ति श्रृंखला में विविधता आने के कारण द्विपक्षीय व्यापार बढ़कर 200 अरब डॉलर से अधिक हो जाएगा।

दस वर्षीय मास्टर डिफेंस पार्टनरशिप (एमडीपी) ढांचा अंतरसंचालनीयता को बढ़ाता है, जिसमें युद्ध अभ्यास 2026 बहु-क्षेत्रीय अभियानों पर केंद्रित है। मालाबार के माध्यम से आयोजित क्वाड समुद्री अभ्यास और कॉम्पैक्ट पहल, चीन के खिलाफ हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सैन्य प्रौद्योगिकी और वाणिज्यिक तत्वों को एक साथ काम करने में सक्षम बनाते हैं। आईसीईटी कार्यक्रम ट्रस्ट ढांचे के माध्यम से सेमीकंडक्टर और एआई सिस्टम विकसित करता है, साथ ही जीई-एफ414 इंजन के सह-उत्पादन सहित दो अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी विकास परियोजनाएं स्थापित करता है।

रूस-यूक्रेन संघर्षों के बावजूद भारत दक्षिण कोरिया के साथ संबंध बनाए रखता है, वहीं सीएएटीएसए छूट के तहत भारत को अपाचे हेलीकॉप्टर और ड्रोन जैसी हथियारों की खेप की अनुमति मिलती रहती है। 45 लाख प्रवासी भारतीयों का समुदाय अंतरराष्ट्रीय संबंध स्थापित करता है, लेकिन एच-1बी वीजा की सीमाएं आईटी उद्योग के लिए काम करना मुश्किल बना देती हैं। सैन्य साझेदारियों पर भारत की एमएनए (अमेरिकी राष्ट्रीय राष्ट्रीय संगठन) से अलग स्थिति दर्शाती है कि रणनीतिक स्वायत्तता उसकी विदेश नीति के निर्णयों को कैसे निर्देशित करती है।

यह संबंध एक 'अपरिहार्य साझेदारी' के रूप में कार्य करता है जो आर्थिक बहाली को तकनीकी एकीकरण और रक्षा समन्वय के साथ जोड़ता है ताकि पारस्परिक खतरों के खिलाफ सामान्य सुरक्षा के माध्यम से दोनों पक्षों को लाभ हो सके। भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच रणनीतिक स्तंभ एक मजबूत आधार स्थापित करते हैं जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चुनौतियों का समाधान करते हुए सुरक्षा और आर्थिक विकास तथा नवोन्मेषी विकास को बनाए रखकर उनकी व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी का समर्थन करता है।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका की आधिकारिक यात्रा की। डोनाल्ड रियल द्वारा अमेरिकी राष्ट्रपति से मुलाक़ात कर दोनों देशों ने परिवर्तनकारी बदलावों की एक नई पहल '21वीं सदी के लिए यू.एस.-भारत संघर्ष' (कॉम्पैक्ट: सैन्य भागीदारी, त्वरित वाणिज्य और प्रौद्योगिकी के लिए उत्प्रेरक अवसर) की शुरुआत के लिए सहयोग के प्रमुख स्तंभों की शुरुआत की। इसका उद्देश्य रक्षा, व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, प्रौद्योगिकी और नवाचार, लोगों के बीच संबंध और बहुआयामी सहयोग के संयोजन के लिए नए व्यापक ढाँचे के रूप में कार्य करना है।

भारत और अमेरिका ने संयुक्त विकास, संयुक्त उत्पादन और डॉलर स्थानांतरण सुनिश्चित करने के प्रयास में वर्ष 2030 तक 500 तक स्वदेशी का समूह व्यापार लक्ष्य निर्धारित किया है। भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार अमेरिका है। इसके तहत दोनों देश वस्तु एवं सेवा क्षेत्र में लघु व्यापार को मजबूत करने के लिए ऑनलाइन आयातित अनुपात, बाजार पहुंच में वृद्धि, टैरिफ और गैर-टैरिफ स्टेशनों पर काम करना और आपूर्ति श्रृंखला एकीकरण की दिशा में काम करना होगा। दोनों स्टार्स ने दूसरे देशों में एक-दूसरे के उच्च मूल्य वाले उद्यमों के लिए ग्रीनफील्ड निवेश के अवसरों को बढ़ाने के लिए निवेशकों की तलाश की है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने 21वीं सदी में अमेरिका-भारत के लिए प्रमुख रक्षा साझेदारी की इस वर्ष एक नवीन दस वर्षीय ढाँचे पर हस्ताक्षर करने की घोषणा की है। अमेरिका द्वारा भारत से F-35 लड़ाकू विमानों को कम करने के लिए अमेरिका ने व्यापार हैशटैग को कम करने की घोषणा की। इससे भारत उन्नत विमान संचालन वाले विशिष्ट समूह में शामिल हो जाएगा। रक्षा अभ्यारण्य प्राधिकरण-1 (STA-1) के अंतर्गत एक प्रमुख रक्षा साजो-सामान के तहत अमेरिका और भारत में अंतर्राष्ट्रीय शस्त्र विनियम (शस्त्र विनियमों में अंतर्राष्ट्रीय यातायात: ।TAR) शामिल हैं। STA-1 के अंतर्गत रक्षा व्यापार, अत्याधुनिक इंटरनेट एक्सचेंज एवं, अतिरिक्त आपूर्ति और अमेरिका द्वारा प्रदान की जाने वाली रक्षा क्षेत्र के देशों में आपूर्ति को सुविधा प्रदान करना शामिल है। रक्षा औद्योगिक सहयोग के लिए अमेरिका-भारत रोडमैप के साथ ही शुरू किए गए लक्ष्यों को पहचानना, दोनों देशों ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उद्योग में भागीदारी और उत्पादन बढ़ाने के लिए ऑटोनॉमस सिस्टम इंडस्ट्री एलायंस (ऑटोनॉमस सिस्टम इंडस्ट्री अलायंस: एशिया) ने एक नई पहल की घोषणा की।

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वरुप हम कह सकते है कि अमेरिका-भारत रणनीतिक भागीदारी के लिए बहुत महत्वाकांक्षी है। दुनिया में दोंनो देश आपस में एक दृढ़ता और साझेदारी रखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय पहचान क़ायम कर रहे है । सच्चाई भी यहीं है कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में किसी भी रिश्ते की तरह महत्वपूर्ण है जो अवसर हमारे पान क्षेत्र और उसके परे होने वाले संभावित प्रभाव दोनों ही रूप में। हालांकि भारत और अमेरिक स्वतंत्रता और संप्रभुता को पोषित कर रहे हैं। हमारी भागीदारी का असली मूल्य यह है कि सुरक्षा और समृद्धि के लिए वैश्विक मामलों को सकारात्मक रूप से प्रभावित और सबसे बड प्राप्त कर सकने में सक्षम बना सकती है। निश्चित रूप से यह होगा हमें मित्र के रूप म स्वीकृति, भरोसा, लचीलापन और स्थिरता के साथ अपने कार्य करने चाहिए । राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत को 'सच्चा दोस्त' कहा है। और प्रधानमंत्री मोदी ने प्रधान कथन दोहराया है जिसमें उन्होंने हमारे देशों को 'स्वाभाविक मित्र'रूप में वर्णित किया है अतः इससे निश्चित ही एक मजबूत, टिकाऊ और अनुकूल भागीदारी का निर्माण होगा।

सन्दर्भ सूची

1. indiatimes-com
2. दृष्टि द विजन
3. यू.एस में भारतीय प्रवासी महत्वपूर्ण क्यों हैं, द इकनोमिक टाइम्स, 2024
4. inusembassy-gov
5. info@nextias.com
6. https://www.ijhssi.org
7. https://www.legacyias.com